आकाश) तथा **लोकत्रयम्** शब्द महत्त्वपूर्ण हैं। प्रतीत होता है कि श्रीभगवान् के विश्वरूप को न केवल अर्जुन ने देखा, वरन् त्रिलोकी में अन्य प्राणियों को भी उसका दर्शन हुआ। अतएव वह रूप स्वप्न नहीं था। त्रिभुवन में जो-जो भी भक्तिमान थे, उन सभी ने दिव्य दृष्टि से उसका दर्शन किया।

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।।२१।।

अमी=वे सब; **हि**=निस्सन्देह; **त्वाम्**=आप में **सुरसंघाः**=देववृन्द; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **केचित्**=उनमें से कुछ; **भीताः**=भयभीत हुए; **प्राञ्जलयः**=करबद्ध; **गृणन्ति**=प्रार्थना करते हैं; **स्वस्ति**=शान्ति (हो); **इति**=इस प्रकार; **उक्त्वा**=कह कर; **महर्षि**=महान् ऋषि; **सिद्धसंघाः**=सिद्धों के समुदाय; **स्तुवन्ति**=स्तुति करते हैं; **त्वाम्**=आप की; **स्तुतिभिः**=स्तोत्रों द्वारा; **पुष्कलाभिः**=वैदिक।

अनुवाद

देववृन्द आपकी शरण लेकर आपमें प्रवेश कर रहे हैं। अत्यन्त भयभीत होने के कारण उनमें से कुछ दूर से ही हाथ जोड़े हुए प्रार्थना कर रहे हैं और महर्षि और सिद्धों के समुदाय कल्याण हो, ऐसा कहकर वैदिक मन्त्रों से आपकी स्तुति करते हैं।।२१।।

तात्पर्य

सारे त्रिभुवन के देववृन्द भयंकर विश्वरूप और उसकी जाज्वल्यमान ज्योति से महान् भय को प्राप्त हो रहे थे। अतः इस भीति से अपनी रक्षा के लिये वे श्रीभगवान् से प्रार्थना करने लगे।

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे।।२२।।

रुद्र=शिव के रूप; **आदित्याः**=बारह आदित्य; **वसवः**=आठ वसु; **ये**=जो; **च**=तथा; **साध्याः**=साध्यगण; **विश्वे**=विश्वदेव; **अश्विनौ**=दोनों अश्विनीकुमार; **मरुतः**=मरुद्गण; **च**=तथा; **उष्मपाः**=पितर; **च**=तथा; **गन्धर्व**=गन्धर्वगण; **यक्ष**=यक्ष; **असुर**=राक्षस; **सिद्धसंघाः**=सिद्धगणों के समुदाय; **वीक्षन्ते**=देखते हैं; **त्वाम्**=आपको; **विस्मिताः**=विस्मित हुए; **च**=तथा; **एव**=निस्सन्देह; **सर्वे**=सभी।

अनुवाद

ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य, आठ वसु, साध्यगण, विश्वदेव, दोनों अश्विनी कुमार, मरुद्गण और पितर तथा गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्धगण आदि सभी विस्मय-विस्फारित हुए आपको देखते हैं।।२२।।